Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक संस्कृति प्रधान गीतों की संगीतात्मक विशेषताऐं

VANDANA VARUN

Music Department, Dayalbagh Educational Institute,Dayalbagh , Agra

सारांश

लोक संस्कृति किसी भी देश अथवा प्रदेश का अभिन्न अंग होती है लोक संस्कृति द्वारा उस देश अथवा प्रदेश का व्यापक दृश्य नेत्रों के सम्मुख आ खड़ा होता है भाषा गीत संगीत लोकवाद्य रहन-सहन, रीति रिवाज, पर्व त्यौहार, वस्त्र आभूषण खान-पान संस्कृति के अभिन्न अंग हैं इनमें से गीत संगीत पर्व त्यौहार लोक संस्कृति के प्रमुख तत्व कहे जा सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में लोक संस्कृति में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न गीतों की सांगीतिक विशेषताओं पर आधारित है।

मुख्य शब्द – लोक, संस्कृति, गीत, संगीतात्मक।

लोक संस्कृति का अर्थ

लोक संस्कृति दो शब्दों से मिलकर बनी है, लोक + संस्कृति। लोक संस्कृति का अर्थ उन लोगों से माना गया है, जो केवल असभ्य एवं अशिक्षित है। संस्कृति का अर्थ वह सीखा गया व्यवहार है जो कि पीढी दर पीढी हस्तांतरित होता है।

लोक संस्कृति का वास्तविक अर्थ उस संस्कृति से होता है जो कि ग्रामीण और विशेष तौर से कृषक से उदय होती है और उसी समाज में विकसित होती है। ग्रामीण लोक संस्कृति को परिभाषित करते हुए जार्ज एम फोस्टर ने बताया है कि, लोक संस्कृति को जीवन के एक सामान्य जीवन यापन की विधि के रुप में देखा जा सकता है जो एक क्षेत्र विशेष के रुप में बहुत से गांवों कस्बों तथा नगरों के कुछ लोगों या सभी लोगों की विशेषता के रुप में होती है और एक लोक समाज उन व्यक्तियों के एक संगठित समूह के रुप में है जिसकी एक अपनी पृथक लोक संस्कृति होती है।

वास्तव में यहां विश्व संस्कृतियों के अध्ययन की दृष्टि से दो प्रकार की संस्कृतियां स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। प्रथम लोक संस्कृति है जिसका सीधा सम्बन्ध लोक से है। एवं दूसरी संस्कृति समाज के विद्धित वर्ग द्वारा सूचित संस्कृति से है जो प्रायः नगरों या विद्या के केन्द्रों में निर्मित होती है। अर्थात् लोक संस्कृति नगरीय व विद्धित समाज से भिन्न विशेषताओं वाली संस्कृति मानी जाती है।

लोक संस्कृति की परिभाषाऐं

लोक संस्कृति की परिभाषाऐं इस प्रकार है

रेडफील्ड के अनुसार, "यह एक ऐसा समाज है जिसका आकार छोटा होता है तथा जिसमें अकेलापन, अशिक्षा, समानता, समूह दृढ़ता की भावना एवं जीवन का रुढ़िगत ढंग पाया जाता है।"

डॉ. सम्पूर्णानन्द के अनुसार, "लोक संस्कृति वह जीती-जागती वस्तु है जिसके द्वारा लोक की संस्कृति बोलती है।"

जी.एम. फोस्टर के मतानुसार, "लोक संस्कृति को जीवन की एक ऐसी सामान्य विधि के रुप में समझा जाता है जो एक क्षेत्र विशेष के गांवो, कस्बों तथा नगरों के पास भी व्यक्तियों की विशेषता के रुप में स्पष्ट होती है तथा लोक समाज उन व्यक्तियों का एक संगठित समूह है जो लोक संस्कृति से बंधा होता है।"

जार्ज एम. फैस्टर के अनुसार 'लोक संस्कृति को परिभाषित करते हुए लिखा है,' "लोक संस्कृति को जीवन के सामान्य तरीके के रूप में देखा जा सकता है जो एक क्षेत्र विशेष में बहुत से गांवों, कस्बों तथा नगरों के कुछ था सभी लोगों की विशेषताओं के रुप में है और लोक समाज उन व्यक्तियों के एक संगठित समूह के रुप में है जिसकी एक लोक संस्कृति है।"

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक संस्कृति की विशेषताऐं

(1) सरलता प्रधान

लोक संस्कृति में सहजता, सरलता, एवं गहनता इसकी महत्वपूर्ण विशेषताऐ हैं । इसने बनावटीपन और दिखावा नहीं होता है। ग्रामीण एवं जनजातीय समाज के जैसी ही इनकी संस्कृति सम्पूर्ण सरल है, एवं लोक संस्कृति की भाषा न तो जटिल है न ही कठिन, इनका जीवन सरल एवं संस्कृति भी सरल है।

(2) पारम्परिक मौखिक संस्कृति

लोक संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है, इसका कोई लिखित स्वरुप नहीं होता है। बल्कि यह मौखिक रुप से ही पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। इसकी कोई भी ऐसी संस्था नहीं है जो व्यवस्थित रुप से प्रशिक्षण दे सके। इसमें धर्म, साहित्य, संगीत, लोक गाथाओं एवं विश्वासों के प्रशिक्षण को ही अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाया गया है। इसमें इससे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के व्यवहारों विश्वासों, विधि विधानों एवं शिष्टाचार के लिए किसी भी प्रकार कोई नहीं बनाया जाता, बल्कि इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार एवं पडौस के लोगों से मौखिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(3) समूहाधारित

लोक संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष की निधि नहीं है। यह तो सम्पूर्ण समाज के सहयोग से अनजाने से हुई किसी कारण से उत्पन्न हुई एवं पूरे समाज की सम्पत्ति बन गयी है। लोक संस्कृति में सामूहिक प्रेरणा सामूहिक हिस्सा लेने की भावना और सामूहिकता पायी जाती है, यह आज भी जीवित है।

(4) पिछड़ा समाज प्रधान

लोक संस्कृति के पिछडे हुए समाज से जोड़ा गया है। इसका जन्म जनजातियों कबीलों और कृषि समाज से हुआ बताया गया है। इसीलिए यह सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ विकसित हुई है एवं यह अपने ही समुदायों की सीमाओं में प्रभावित रुप से कार्य करती है इसीलिए जितनी विविधता लोक संस्कृति में है, उतनी नगरीय संस्कृति में नहीं है।

(5) कृषि प्रधान

भारत की लोक संस्कृति मूलतः कृषि समाज क्षेत्र से जुड़ी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर कार्य, उत्सव, मेले एवं हाट , पूजा – पाठ, देवी देवताओं की पूजा करना, लोक गीत एवं लोक नृत्य कृषि से सम्बन्धित है।'

(6) अव्यवसाय प्रधान

लोक संस्कृति किसी भी व्यापार से जुडी हुई नहीं है इसमें किसी भी प्रकार का कोई उद्देश्य,एवं ना कोई मुनाफा कमाने से है। इससे सम्बन्धित जितने भी विचारक, कलाकार, संगीतज्ञ एवं शिल्पकार है वे इससे किसी भी प्रकार का लाभ नहीं उठाते बल्कि उनका ध्येय तो केवल – ग्रामीण लोगों के मनोरंजन एवं उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करना होता है।

(7) कलात्मक सहभागिता

लोक संस्कृति के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं में सभी का सहयोग होना चाहिए । इससे तात्पर्य है कि इसके अन्तर्गत जितने भी दर्शक एवं कलाकार है उन्हें किसी भी वर्ग में नहीं बांटा जा सकता, क्योंकि इसमें एक समय में जो व्यक्ति दर्शक है वह अगले समय में कलाकार बन जाता है। लोक नृत्य के प्रतिभागी स्वयं गीतों की रचना करके उन्हें गाते हुए साथ में नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

(8) सामाजिक संस्थाधारित

इन संस्थाओं के अन्तर्गत आने वाले ग्रामीण परिवार, विवाहों, धर्म, न्याय, सेवा एवं मनोरंजन इत्यादि ये सभी जुडी हुई है इसमें संयुक्त परिवार ही लोक संस्कृति एवं लोक संस्थाओं को सुरक्षित करते हैं।

(9) स्थानीय स्वरुपाधारित

हमारे भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ऐसे देवी –देवताओं को माना जाता है जहां पर सभी तीज त्यौहार पारम्परिक तौर पर मनाये जाते हैं किंतु कुछ देवी – देवताओं त्यौहार, पर्व ऐसे भी है जिन्हें सम्पूर्ण भारत में ना मानकर केवल स्थानीय ही माना जाता है। एवं लोक संस्कृति में इसे अधिक महत्व दिया जाता है। धर्म एवं विश्वासों के इस स्थानीय स्वरुप के कारण ही लोक संस्कृति की विशेषता स्पष्ट होती है।

(10) कतिपय अभाव

लोक संस्कृति एवं अभिजात संस्कृति एक दूसरे से प्रभावित होती रहती है। लोक संस्कृति अभिजात संस्कृति से अपने सदस्यों के भौतिक तथा अभौतिक होती विकास के लिए बड़ी सीमा तक प्रभावित होती रही है। इस प्रकार से अभिजात संस्कृति भी लोक के अपने में उसमें कुछ परिवर्तन करके समाविष्ट करती जा रही है।

संगीत प्रधान लोक संस्कृति

लोक संगीत को किसी भी शास्त्र पक्ष में नहीं रखा जाता और न किसी लोक संगीतकार ने इसे आवश्यक माना है। इस क्षेत्र में भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति के अन्तर्गत स्वतंत्र स्वर उत्पन्न हुए एवं इसमें लोक संगीत की उत्पत्ति हुई, प्रारम्भ में मनुष्य ने अपनी वाणी और स्वर शक्ति को पहचान करके पशु पक्षियों के साथ आवाज मिलाने का प्रयास किया होगा, मिट्टी के बर्तनों से आवाज निकालने की कोशिश की होगी। यहीं से स्वर वाद्यों की उत्पत्ति मानी जा सकती है। लोक संगीत से ही शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है लोक संगीत में किसी भी प्रकार के अनुशासन की कोई आवश्यकता नहीं होती, इसी कारण यह जन समूह के कण्ठ में लोकप्रिय है। लोक संगीत में पारम्परिक दक्षता का बहुत अधिक महत्व है। कोई भी महिला व पुरुष बाल्यावस्था में ही अपने दादा दादी , व नाना नानी से गाना बजाना सीखता है, तो वह किशोरावस्था तक आते-आते संगीत में पारंगत हो जाता है। यह परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती है इससे लोक कला निरन्तर जारी रहती है।

लोक संगीत के स्वर सुचालक रुप होते हैं। ये समाज एवं संस्कृति को जोड़े रखते है। इनमें संस्कृति एवं कला के सभी आयाम होते हैं, इसी कारण लोक संगीत को मनुष्य के आनन्द की अनुभूति कहा है।

लोक संस्कृति में प्रयुक्त विभिन्न गीत

लोक गीतों ने लोक संस्कृति में एक सहज ही रूपरेखा बनाई है, जिसमें अनेकों शैलियां, कई भाषाओं में गाये जाने वाले गीत लोक संस्कृति के रुप को दर्शाते हैं। लोक मानस की एक – एक रेखा, सुख – दुःख, हास-परिहास, विजय-पराजय के गीत, आस्था विश्वास, कर्मण्यता, सौजन्यता शालीनता के मूल तत्वों से समन्वित होकर जीवन के समस्त भावों (वीर, करुण, सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक) के दर्शन करते हैं। यूं तो लोक संस्कृति में विभिन्न त्यौहार, मेले, पर्व, उत्सव, जश्न समारोहों में संगीत का प्रयोग होता है किंतु यहां केवल धार्मिक गीत, जन्म के गीत, विवाह के गीतों पर ही प्रकाश डाला जा रहा है।

लोक संस्कृति में निहित विभिन्न गीत

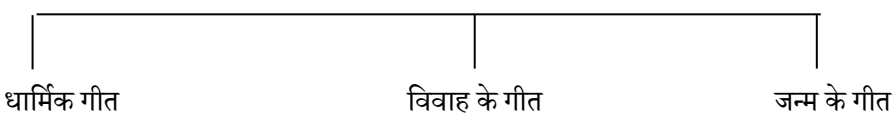

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

धार्मिक गीत

चैत्र मास में नौ दुर्गा की पूजा सभी लोग अपने-अपने घरों में करते हैं, एवं इन दिनों में पूरे नौ दिनों तक देवी गीत गाने की प्रथा है, रात्रि में जागरण भी होता है इनमें प्रबन्ध गीत एवं फुटकर गीत भी गाये जाते हैं, लांगुरिया का प्रचलन भी है। देवी के गीतों में नारियल, लौंग–धूप, पान बीढी चढ़ाये जाते हैं और माता का गुणगान करते हैं जेठ के महीने में एकादशी के गीत भी गाये जाते हैं। जो इस प्रकार हैं –

देवी माता का गीत

स्थाई –

सा सा सारे रे रेरे ग रेसा रे ग म ग म S

हा थ जोड़ के खड़ी हूँ तेरे द्वार में री मां

रे ग म प प नि ध म म नि धप ध म ग म S

पू री कर दे मुरा दे ए क बाड र मे री मां

ग रे सा सा रे रे रे रे मम ग प म ग रे S

ते री कंज के बिटाऊ पूरी हल वा खिलाऊं

सा सा सा सा ग ग रे म म धप म ग रे रे S

ते री जो त ज गा ऊं ला ल चु न री चढ़ाऊं S

सा सा ग ग रे प म ग रे रे रेS

मा ता रा नि ये ओ मा ता रा नि ये S

अन्तरा –

1. ध प म ग रे रे म म धपम ग रे रेरे

ले के ते रा ना म मै ने तु झ को पु का रा है

सा सा सा ग ग ध़ ध़ ध़ ध़ म ग रे रे

जय माता दी जय माता दी जय माता दी

ध प म ग रे रे म न ध प म ग रे रे रे

ते रा ही भरोसा मु झे ते रा ही स हा रा है

सा सा सा ग ग ध़ ध़ ध़ ध़ म ग रे रे

जय माता दी जय मा ता दी जय माता दी

तू है दयावान तू ही मेरा दुःख टालेगी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

तू ही मेरी नैया मझदार से निकलेगी

तू ही मुझको उतारेगी पार मेरी मां -2

दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार रहेगा।

2. देगी मुझे लाला तू ही गोद मेरी भरेगी

जय माता दी, जय माता दी, जय माता दी,

तू ही मेरे घर का अंधेरा दूर करेगी

जय म

मुख से तो बोलो ओ मां

मुख से तो बोल मैं भी तेरी सन्तान हूँ

तुझे चुप देख के मैं बड़ी परेशान हूँ

दे दे ममता तू दे दे दुलार मेरी – 2

हाथ जोड़ - - - - - - - - - - - - - -

विवाह के गीत

कन्या के लिए वर ढूंढने एवं वर के लिए कन्या ढूंढने में कन्या विदाई एवं बहू आगमन तक के गीत ब्रजभाषा में मिलते हैं। कन्या पक्ष के यहां जो गीत गाये जाते हैं करुण रस भी होता है। इन गीतों में पीरी चिट्ठी के गीत, भात मांगने के गीत, फलदान, मंडप गाड़ने, देवी गीत, मंडप छाने, चढ़ावे, भावर, द्वार चार मेंहदी, कलेवा, उबरन, तेल चढ़ाने, तेल उतारने, कन्यादान, द्वार छेंकने, बढ़ार गारी, भात कंगन बांधने पलंग चार विदाई, चोरी गुंथाई के गीत प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार वर पक्ष के गीतों में भांत मांगने , मंडप गाडने, देवता – पितृ आह्वान के, वस्त्र पहनने के, नजर उतारने के, कंगन छुड़ाने, फलदान के तेल चढ़ाने और पहनाने, निकरोसी, उबटन, मेंहदी और सिरनी, बन्ना, घोड़ी, सुहाग, गारी, कागज लगाई, सहरा के गीत प्राप्त होते हैं। विवाह के गीत की कुछ पंक्तियां यहां प्रस्तुत की जा रही है –

स्थाई –

सा सा रे ग रे रेम गरे	सा सा रे ग रे
ल ग न आ ई हरे हरे	ल ग न आ ई
नि ध नि नि सां	सा सा नि ध प ध नि नि सां नि सां S
मे रे अं ग ना	र घु नं S न्द न फू ले ना मा यें
नि नि नि ध ध ध S	नि नि नि सा सा सा ग ग ग रे नि सा
चा चा भी स ज ग ये	ता ऊ भी सज ग ये स ज गई सारी बारात
म म म म म म म म	मम मम

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अ रे ब न्नौ मे रा ऐसे सज गया

ग ग रे रे सा S S

जै से श्री भगवान

लगन आई हरे - - - - - - - - - - - - - - - -

शेष अन्तरे इसी प्रकार रहेंगे।

2.मामा भी सज गए, मामी भी सज गई

सज गई सारी बारात।

अरे बन्नो जी तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।

लगन आई - - - - - - - - - - - - - - - -

3. भईया सज गए, भाभी सज गई

सज गई सारी बारात

अरे बन्नो जी तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।

लगन आई - - - - - - - - - - - - -

4. फूफा सज गए, बुआ सज गई

सज गई सारी बारात

अरे बन्नो जी तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।

लगन आई - - - - - - - -- - - - -

जन्म के गीत

बच्चे के जन्म के समय में सोहर के गीत गाये जाते हैं। इसमें बच्चे के नौ महीनों के गीतों का वर्णन प्राप्त होता है। जो कि इस प्रकार है –

लल्ला के सुन के मैं आई

स्थाई –

ग ग ग ग रे ग म ग रे सा

ल ल्ला के सुन के मैं आ S ई

सा सारे S सा नि S सारे रे ग रे सा सा नि S

य शोदा म ईया दे दो ब धा S ई म ई या

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लल्ला के - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

अन्तरा –

सा ग म प प पपप मेप ध म S ग

टी का भी दे दो म ई या न ध नी भी दे दो - 2

गग ग ग रे ग म गरे सा

झुम के भी दे दो ब धा S ई

सा सारे S सा नि s सा रे रे गरे सा

य शो दा म ई या दे दो ब धाS ई

शेष अन्तरे इसी प्रकार रहेंगे।

लल्ला के - - - - - - - - - - - - - - - - -

हरवा भी दे दो मईया, चुनरी भी दे दो -2

कंगना भी दे दो बधाई ,

यशोदा मईया - - - - - - - - - - - - - - - - -

लल्ला के - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

उपसंहार

लोक संस्कृति व इसमें निहित गीत एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी संस्कृति में कला, संगीत व साहित्य का अभूतपूर्व योगदान रहता है और लोक संस्कृति तो हृदयस्पर्शी भावों की परिचायक होती है।

सन्दर्भ

लोक भाषा एवं संगीत , डॉ. मधुरानी शुक्ला पेज नं. 5,23 कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
(कृष्ण जन्म) – मैथिली ठाकुर; youtube website www. Maithilithakur.in
Lyric gaan. http://www. Lyricsgaon.com.>hath-J -